सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का परिचय

प्रश्न 1 (आसान). अज्ञेय जी का जन्म किस राज्य में हुआ था?
उत्तर – उत्तर प्रदेश

प्रश्न 2 (आसान). अज्ञेय जी ने प्रारंभिक शिक्षा किन भाषाओं में प्राप्त की थी?
उत्तर – अंग्रेजी और संस्कृत

प्रश्न 3 (मध्यम). क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लेने के कारण अज्ञेय जी के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर – उन्हें अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी, वे चार साल जेल में रहे और दो साल नजरबंद भी।

प्रश्न 4 (कठिन). अज्ञेय जी आरंभ में किस विषय के विद्यार्थी थे और बाद में उन्होंने किस विषय में एम.ए. में प्रवेश लिया?
उत्तर – वे आरंभ में विज्ञान के विद्यार्थी थे और बी.एससी. करने के बाद उन्होंने एम.ए. अंग्रेजी में प्रवेश लिया।

» अज्ञेय का साहित्यिक योगदान और बहुमुखी प्रतिभा

प्रश्न 5 (आसान). अज्ञेय जी ने कविता के अलावा और कौन-कौन सी साहित्यिक विधाओं में लेखन किया है?
उत्तर – कहानी, उपन्यास, यात्रा-वृत्तांत, निबंध, आलोचना।

प्रश्न 6 (आसान). 'तार सप्तक' परंपरा का सूत्रपात किसने किया?
उत्तर – सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने।

प्रश्न 7 (मध्यम). अज्ञेय जी को कौन-कौन से प्रमुख पुरस्कार प्राप्त हुए हैं?
उत्तर – साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारत भारती सम्मान, भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार।

प्रश्न 8 (कठिन). अज्ञेय जी के काव्य में किन दो प्रमुख विषयों पर विशेष बल दिया गया है?
उत्तर – प्रकृति-प्रेम और मानव-मन के अंतर्द्वंद्व।

» अज्ञेय की प्रमुख काव्य-कृतियाँ और काव्य-भाषा

प्रश्न 9 (आसान). अज्ञेय की किन्हीं दो प्रमुख काव्य-कृतियों के नाम बताइए।
उत्तर – भग्नदूत, चिंता

प्रश्न 10 (आसान). 'यह दीप अकेला' कविता में 'दीप' किसका प्रतीक है?
उत्तर – व्यक्ति का

प्रश्न 11 (मध्यम). अज्ञेय की कविता में 'व्यक्ति की स्वतंत्रता' का आग्रह कैसे झलकता है?
उत्तर – अज्ञेय अपनी कविताओं में व्यक्ति के अपने निर्णय लेने, अपनी राह चुनने और किसी दबाव में न आने के महत्व पर ज़ोर देते हैं। वे व्यक्ति के 'स्व' (self) की पहचान और उसके विकास को आवश्यक मानते हैं।

प्रश्न 12 (कठिन). 'यह दीप अकेला' कविता में 'व्यष्टि का समष्टि में विलय' से क्या अभिप्राय है? उदाहरण सहित समझाइए।
उत्तर – 'व्यष्टि का समष्टि में विलय' का अर्थ है किसी एक व्यक्ति का समूह या समाज में शामिल हो जाना। जैसे एक अकेला मज़दूर कितना भी मेहनती हो, लेकिन जब वह कई दूसरे मज़दूरों के साथ मिलकर एक संगठन बनाता है, तो उनकी सामूहिक शक्ति बहुत बढ़ जाती है और वे बड़े काम कर पाते हैं। दीप अकेला होकर भी मूल्यवान है, पर पंक्ति में मिलकर उसकी सार्थकता और प्रभाव बढ़ जाता है, ठीक वैसे ही जैसे एक व्यक्ति का समाज से जुड़कर। यह आत्म-केंद्रित होने की बजाय समाज-उन्मुख होने की बात है।

» 'यह दीप अकेला' कविता का केंद्रीय भाव

प्रश्न 13 (आसान). कविता में 'दीप' किसका प्रतीक है?
उत्तर – व्यक्ति का।

प्रश्न 14 (आसान). 'पंक्ति को दे दो' से कवि का क्या तात्पर्य है?
उत्तर – व्यक्ति को समाज में शामिल कर लेने से।

प्रश्न 15 (मध्यम). 'यह दीप अकेला' कविता में व्यक्ति और समाज के रिश्ते को कैसे समझाया गया है?
उत्तर – दीप (व्यक्ति) को स्नेह और गर्व से भरा बताते हुए भी, उसे पंक्ति (समाज) में शामिल करने पर जोर दिया गया है, ताकि उसकी सार्थकता बढ़े।

प्रश्न 16 (कठिन). अज्ञेय ने व्यक्तिगत सत्ता को सामाजिक सत्ता से जोड़ने पर क्यों बल दिया है?
उत्तर – क्योंकि कवि का मानना है कि व्यक्ति भले ही कितना भी सर्वगुणसंपन्न हो, उसकी असली शक्ति और सार्वभौमिकता समाज में उसके विलय से ही आती है, जिससे समाज और राष्ट्र मज़बूत होता है।

» 'यह दीप अकेला' में व्यक्ति और समाज का संबंध

प्रश्न 17 (आसान). कविता में 'दीप' किसका प्रतीक है?
उत्तर – व्यक्ति का

प्रश्न 18 (आसान). कवि 'दीप' को किसे देने की बात करता है?
उत्तर – पंक्ति को (समाज को)

प्रश्न 19 (मध्यम). 'आत्मबोध का विश्वबोध में रूपांतरण' से कवि का क्या तात्पर्य है?
उत्तर – व्यक्ति जब अपनी पहचान को समाज की बड़ी पहचान में मिला देता है, तो उसकी समझ और उद्देश्य व्यापक हो जाते हैं।

प्रश्न 20 (कठिन). कविता में 'पनडुब्बा' और 'समिधा' किस प्रकार व्यक्ति की विशिष्टता को दर्शाते हैं और समाज से उसके संबंध को स्पष्ट करते हैं?
उत्तर – 'पनडुब्बा' उस व्यक्ति का प्रतीक है जो अपनी मेहनत से ज्ञान (मोती) प्राप्त करता है, और 'समिधा' वह व्यक्ति है जो अपने त्याग से प्रेरणा (आग) उत्पन्न करता है। इन दोनों को 'पंक्ति को दे दो' कहने का अर्थ है कि व्यक्तिगत ज्ञान और त्याग समाज के व्यापक हित में समर्पित होने चाहिए।

» 'यह दीप अकेला' की दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक गहराई

प्रश्न 21 (आसान). कविता में 'पीड़ा' की किस विशेषता का उल्लेख किया गया है?
उत्तर – पीड़ा जिसकी गहराई को स्वयं उसी ने नापा है, यानी वह निजी और गहरा अनुभव है।

प्रश्न 22 (आसान). किन कड़वे अनुभवों का ज़िक्र कविता में किया गया है?
उत्तर – कुत्सा (बुराई), अपमान और अवज्ञा (बात न मानना) जैसे कड़वे अनुभव।

प्रश्न 23 (मध्यम). 'चिर-अखंड अपनापा' से कवि क्या कहना चाहते हैं? यह क्यों महत्वपूर्ण है?
उत्तर – इसका अर्थ है व्यक्ति की वह अटूट और शाश्वत मानवीयता, उसका सहज प्रेम और दयालुता, जो किसी भी परिस्थिति में खंडित नहीं होती। यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यही गुण व्यक्ति को मानवीय बनाए रखते हैं और उसे समाज से जुड़ने की प्रेरणा देते हैं।

प्रश्न 24 (कठिन). 'यह दीप अकेला' की दार्शनिक गहराई किस प्रकार व्यक्ति की अखंडता को रेखांकित करती है?
उत्तर – कविता की दार्शनिक गहराई व्यक्ति के अंदर के अटूट विश्वास, उसकी स्वयं नापी हुई पीड़ा, और अपमान जैसी नकारात्मक स्थितियों के बावजूद 'सदा-द्रवित' और 'अनुरक्त-नेत्रा' बने रहने में दिखती है। यह दिखाता है कि व्यक्ति का मूल स्वभाव, उसकी मानवीयता और आत्मबल बाहरी परिस्थितियों से प्रभावित नहीं होता, बल्कि वह अपनी मौलिकता और अखंडता को बनाए रखता है, जो अंततः उसे समाज के लिए मूल्यवान बनाती है।

» 'मैंने देखा एक बूँद' कविता का दार्शनिक विश्लेषण

प्रश्न 25 (आसान). 'मैंने देखा एक बूँद' कविता किसने लिखी है?
उत्तर – सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'।

प्रश्न 26 (आसान). कविता में 'बूँद' किसका प्रतीक है?
उत्तर – व्यक्ति या जीव की क्षणभंगुरता का।

प्रश्न 27 (मध्यम). बूँद को 'नश्वरता के दाग से मुक्ति' कैसे मिलती है?
उत्तर – सूर्य के प्रकाश में क्षणभर के लिए चमककर अपनी अलग पहचान बनाकर।

प्रश्न 28 (कठिन). कविता का केंद्रीय दार्शनिक संदेश क्या है, जो जीवन के महत्व को बताता है?
उत्तर – कविता बताती है कि जीवन में हर क्षण महत्वपूर्ण है, और विराट सत्ता के सामने भी क्षणिक अस्तित्व का अहसास नश्वरता के भय से मुक्ति दिलाता है।

» 'मैंने देखा एक बूँद' में क्षणभंगुरता और जीवन का महत्व

प्रश्न 29 (आसान). कविता में 'क्षणभंगुरता' का प्रतीक क्या है?
उत्तर – एक बूँद का समुद्र से अलग होकर पल भर के लिए चमकना।

प्रश्न 30 (आसान). क्षणभंगुरता का क्या अर्थ है?
उत्तर – किसी भी चीज़ का थोड़े समय के लिए ही अस्तित्व में रहना, यानी नश्वर होना।

प्रश्न 31 (मध्यम). कवि 'क्षणिक चमक' के माध्यम से जीवन के किस पहलू पर जोर देते हैं?
उत्तर – जीवन के हर छोटे-से-छोटे पल के महत्व पर और उस पल को पूरी जागरूकता के साथ जीने पर।

प्रश्न 32 (कठिन). 'क्षणभंगुरता' का ज्ञान हमें 'जीवन का महत्व' समझने में कैसे मदद करता है?
उत्तर – यह ज्ञान हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि जब सब कुछ नश्वर है, तो हमारे पास जो भी पल हैं, हमें उन्हें पूरी ईमानदारी से जीना चाहिए, अपने अस्तित्व को पहचानना चाहिए और मिट जाने के डर से मुक्त होकर हर पल का सार्थकता से अनुभव करना चाहिए।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. अज्ञेय जी का मूल नाम क्या था और उन्हें 'अज्ञेय' नाम क्यों मिला?

› सबसे पहले, उनका पूरा, असली नाम लिखेंगे: सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन।

› फिर, बताएंगे कि उन्होंने 'अज्ञेय' नाम से काव्य रचना की, जिसका अर्थ है 'जिसे जाना न जा सके' या 'जो जानने योग्य न हो'।

› आखिर में, यह समझाएंगे कि यह नाम उनकी रहस्यमयी और गहरी सोच को दर्शाता है, और साहित्य में उनकी पहचान बन गया।

उत्तर – अज्ञेय जी का मूल नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन था। उन्हें 'अज्ञेय' नाम साहित्यिक रचनाओं के लिए मिला, जिसका अर्थ 'जिसे जाना न जा सके' है। यह नाम उनकी गूढ़ और स्वतंत्र सोच का प्रतीक था।

उदाहरण 2. अज्ञेय जी की बहुमुखी प्रतिभा को उनकी किन्हीं दो प्रमुख रचनाओं और एक साहित्यिक योगदान के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

› पहला, हम उनकी बहुमुखी प्रतिभा को उनकी रचनाओं से समझेंगे। उपन्यास में उन्होंने 'शेखर: एक जीवनी' जैसा मनोवैज्ञानिक उपन्यास लिखा, जो व्यक्ति के मन के द्वंद्वों को दिखाता है।

› दूसरा, यात्रा-वृत्तांत में 'अरे यायावर रहेगा याद' जैसी रचना लिखी, जो यात्रा के अनुभवों और दार्शनिक विचारों को जोड़ती है। देखो, बच्चों, एक ही लेखक कितनी अलग-अलग तरह की चीज़ें लिख रहा है।

› अब, उनके साहित्यिक योगदान पर आते हैं। उनका सबसे बड़ा योगदान था 'सप्तक' परंपरा की शुरुआत करना। उन्होंने 'तार सप्तक' के ज़रिए सात नए कवियों को एक साथ लाया, जिससे हिंदी कविता को एक नई दिशा मिली। यह दिखाता है कि वो सिर्फ़ ख़ुद ही नहीं लिखते थे, बल्कि दूसरों को भी मंच देते थे।

› अज्ञेय जी ने सिर्फ़ कविताएँ नहीं लिखीं, बल्कि कहानियाँ (जैसे 'विपथगा'), निबंध (जैसे 'त्रिशंकु') और आलोचना (जैसे 'आत्मनेपद') भी लिखीं। इसी को हम 'बहुमुखी प्रतिभा' कहते हैं।

› और उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार जैसा सर्वोच्च सम्मान मिला, जो उनके योगदान का प्रमाण है।

उत्तर – अज्ञेय जी ने 'शेखर: एक जीवनी' (उपन्यास) और 'अरे यायावर रहेगा याद' (यात्रा-वृत्तांत) जैसी विभिन्न विधाओं की रचनाएँ कीं। उनका एक प्रमुख साहित्यिक योगदान 'तार सप्तक' परंपरा का सूत्रपात था, जिसने नए कवियों को मंच दिया और हिंदी कविता को एक नई दिशा दी।

उदाहरण 3. अज्ञेय की कविता 'यह दीप अकेला' के माध्यम से वे क्या संदेश देना चाहते हैं?

› पहले हम कविता के मुख्य प्रतीकों (symbols) को समझते हैं: 'दीप' यहाँ व्यक्ति का प्रतीक है, जो गुणों से भरपूर है, गर्व से भरा है, पर अकेला है। 'पंक्ति' समाज या समूह का प्रतीक है।

› कवि कहते हैं कि यह दीप अकेला है, पर उसे 'पंक्ति को दे दो'। इसका मतलब है कि एक व्यक्ति कितना भी काबिल क्यों न हो, अगर वह समाज से अलग है, तो उसकी सार्थकता अधूरी है।

› दीप का पंक्ति में शामिल होना यानी व्यक्ति का समाज में घुलमिल जाना। इससे व्यक्ति की शक्ति सार्वभौमिक हो जाती है, उसका उद्देश्य और बड़ा हो जाता है।

› कवि 'व्यष्टि का समष्टि में विलय' और 'आत्मबोध का विश्वबोध में रूपांतरण' की बात करते हैं। इसका अर्थ है कि जब हम अपने 'मैं' से निकलकर 'हम' का हिस्सा बनते हैं, तभी हमारा सच्चा विकास होता है और हम समाज के लिए भी महत्वपूर्ण बन पाते हैं।

› तो, इस कविता से अज्ञेय जी ने व्यक्तिगत सत्ता को सामाजिक सत्ता के साथ जोड़ने और समाज में एकजुटता का महत्व समझाया है।

उत्तर – अज्ञेय जी 'यह दीप अकेला' कविता के माध्यम से यह संदेश देना चाहते हैं कि व्यक्ति चाहे कितना भी प्रतिभाशाली और आत्मविश्वासी क्यों न हो, उसकी सच्ची पहचान और सार्थकता समाज के साथ जुड़ने में ही है। व्यक्ति का एकाकीपन दूर होकर वह समाज का मजबूत हिस्सा बन पाता है, जिससे उसकी ताकत और उद्देश्य दोनों विस्तृत होते हैं।

उदाहरण 4. अज्ञेय ने 'यह दीप अकेला' कविता में व्यक्ति और समाज के संबंधों को किस प्रकार दर्शाया है? उदाहरण सहित समझाइए।

› सबसे पहले, कविता के शीर्षक 'यह दीप अकेला' को समझें। यहाँ 'दीप' व्यक्ति का प्रतीक है जो अकेला है, स्नेह और गर्व से भरा है, पर मदमाता भी है।

› फिर, कविता की पंक्ति 'पर इसको भी पंक्ति को दे दो' का विश्लेषण करें। 'पंक्ति' यहाँ समाज या समूह का प्रतीक है। कवि व्यक्ति को समाज में शामिल होने का आह्वान कर रहा है।

› उदाहरण के लिए, सोचिए एक अकेला मज़दूर जो बहुत मेहनती है। लेकिन जब वही मज़दूर किसी बड़ी फैक्टरी में दूसरे मज़दूरों के साथ मिलकर काम करता है, तो उत्पादन कहीं ज़्यादा होता है और पूरे समाज को फायदा मिलता है।

› अंत में, केंद्रीय भाव को स्पष्ट करें कि भले ही व्यक्ति में अनंत क्षमताएँ हों (जैसे दीप में रोशनी), उसकी सार्थकता और प्रभाव तब कई गुना बढ़ जाते हैं जब वह अपनी व्यक्तिगत सत्ता का विलय सामाजिक सत्ता में करता है। यह व्यष्टि का समष्टि में विलय है।

उत्तर – अज्ञेय ने 'यह दीप अकेला' में दीप को एक समर्थ और गुणवान व्यक्ति का प्रतीक माना है। दीप स्नेह, गर्व और मद से भरा है, पर अकेला है। कवि उसे 'पंक्ति को दे देने' की बात कहकर यह संदेश देते हैं कि एक व्यक्ति की पूर्ण महत्ता और सार्थकता तभी है जब वह समाज या समूह में शामिल हो जाए। जैसे एक अकेला दीया रोशनी देता है, पर बहुत सारे दीयों की पंक्ति कहीं अधिक प्रकाश फैलाती है और उसका प्रभाव व्यापक होता है। यह व्यक्ति की क्षमताओं को समाज के सामूहिक हित में लगाने का संदेश है, जहाँ व्यष्टि (व्यक्ति) का समष्टि (समाज) में विलय ही उसकी असली शक्ति है।

उदाहरण 5. कवि ने 'दीप' को किन प्रतीकों के माध्यम से व्यक्ति की विशेषताओं के रूप में प्रस्तुत किया है, और कैसे उसके समाज से जुड़ने पर ज़ोर दिया है?

› कवि ने 'दीप' को 'जन', 'पनडुब्बा', 'समिधा', 'मधु', 'गोरस', 'अंकुर', 'विश्वास', 'पीड़ा' जैसे प्रतीकों से व्यक्ति की विविध विशेषताओं को दर्शाया है।

› जैसे, 'जन' यानी वह व्यक्ति जो गीत गाता है, जो अपनी कला से समाज को कुछ देता है।

› 'पनडुब्बा' वो व्यक्ति है जो मेहनत से गहरे ज्ञान या अनुभव के 'मोती' निकालता है।

› 'समिधा' वो है जो अपनी तपस्या या त्याग से समाज में 'आग' यानी प्रेरणा या ऊर्जा सुलगाता है।

› हर जगह कवि कहता है कि 'इसको भी पंक्ति को दे दो', मतलब इन सभी खास गुणों वाले व्यक्तियों को समाज का हिस्सा बनाना चाहिए।

› यह दिखाता है कि एक व्यक्ति के विशेष गुण तभी सार्थक होते हैं जब वे समाज के बड़े लक्ष्य में समाहित हो जाते हैं, जिससे व्यक्तिगत सत्ता 'सामाजिक सत्ता' में बदल जाती है।

उत्तर – कवि 'दीप' को 'जन', 'पनडुब्बा', 'समिधा' जैसे प्रतीकों से व्यक्ति के विशेष गुणों को बताता है और 'इसको भी पंक्ति को दे दो' कहकर व्यक्ति के समाज से जुड़ने और अपने गुणों को समाज के लिए समर्पित करने पर ज़ोर देता है।

उदाहरण 6. कवि ने 'यह दीप अकेला' में व्यक्ति के 'विश्वास' को किस रूप में प्रस्तुत किया है और इसका क्या महत्व है?

› पहले कविता की पंक्तियां याद करो: 'यह वह विश्वास, नहीं जो अपनी लघुता में भी काँपा'

› इसका मतलब समझो: यहाँ 'लघुता' मतलब व्यक्ति की अपनी कमज़ोरी या सीमितता। 'काँपा' मतलब डगमगाया या टूटा नहीं।

› व्याख्या करो: कवि कहता है कि व्यक्ति का विश्वास ऐसा नहीं है जो अपनी कमज़ोरियों या छोटेपन के कारण डगमगा जाए।

› महत्व बताओ: यह विश्वास व्यक्ति की आंतरिक शक्ति को दर्शाता है, जो उसे मुश्किलों में भी अडिग रहने की प्रेरणा देता है। यह व्यक्तिगत स्वाभिमान और आत्मबल का प्रतीक है।

उत्तर – कवि ने विश्वास को उस आंतरिक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है जो व्यक्ति की अपनी कमज़ोरी (लघुता) में भी नहीं डगमगाता। इसका महत्व यह है कि यह व्यक्ति को स्वाभिमानी, आत्मविश्वासी और विपरीत परिस्थितियों में भी मज़बूत बनाए रखता है, ताकि वह समाज में अपना योगदान दे सके।

उदाहरण 7. कवि अज्ञेय ने 'मैंने देखा एक बूँद' कविता में 'विराट के सम्मुख नश्वरता के दाग से मुक्ति' का क्या अर्थ बताया है?

› पहले सोचो 'बूँद' क्या है और 'विराट' क्या है। बूँद छोटी है, नाशवान है, और विराट समुद्र है, जो अनंत है।

› जब बूँद समुद्र से अलग होती है और सूरज की रोशनी में चमकती है, तो एक क्षण के लिए उसकी अपनी पहचान बनती है।

› यह क्षणभर की चमक उसे उस डर से मुक्त करती है कि वह सिर्फ़ एक छोटी सी बूँद है जो मिट जाएगी।

› कवि बताना चाहते हैं कि जीवन में छोटे से छोटा पल भी महत्वपूर्ण हो सकता है, अगर उस पल में हमें अपने अस्तित्व का अहसास हो जाए।

उत्तर – कवि के अनुसार, जब समुद्र से अलग होकर बूँद सूरज की रोशनी में चमकती है, तो वह क्षणभर के लिए अपनी एक अलग पहचान बनाती है। इसी क्षण में उसे 'नश्वरता के दाग' यानी मिट जाने के डर से मुक्ति का अहसास होता है, क्योंकि वह उस विराट समुद्र के सामने भी अपने 'होने' को महसूस कर पाती है।

उदाहरण 8. कविता 'मैंने देखा एक बूँद' के संदर्भ में 'क्षणभंगुरता' और 'जीवन के महत्व' को स्पष्ट कीजिए।

› पहले 'क्षणभंगुरता' को समझाएँ: यह बताएं कि बूँद का पल भर के लिए चमकना और फिर सागर में मिल जाना ही क्षणभंगुरता है। इसका अर्थ है कि हमारा जीवन भी नश्वर है, यानी एक दिन खत्म हो जाएगा।

› फिर 'जीवन का महत्व' समझाएँ: बताएं कि क्षणभंगुर होने का मतलब यह नहीं कि जीवन का कोई अर्थ नहीं। बल्कि, यही हमें सिखाता है कि जो पल हमारे पास हैं, उन्हें पूरी पहचान के साथ, निडर होकर और सार्थकता से जीना चाहिए।

› दोनों को जोड़ें: यह स्पष्ट करें कि बूँद का चमकना यह दिखाता है कि नश्वरता के बावजूद हम अपने छोटे से अस्तित्व में भी अपनी पहचान और महत्व को अनुभव कर सकते हैं।

› कवि का संदेश: अज्ञेय जी यही संदेश दे रहे हैं कि हर क्षण को जियो, उसे पहचानो और मिट जाने के भय से मुक्त

हो जाओ।

उत्तर – कविता में 'क्षणभंगुरता' का अर्थ है जीवन की नश्वरता, जैसे बूँद पल भर चमक कर सागर में मिल जाती है। इसका मतलब यह नहीं कि जीवन व्यर्थ है, बल्कि यही हमें सिखाता है कि हर 'क्षण' को पूरी पहचान और निडरता के साथ जीना ही 'जीवन का महत्व' है, जिससे हम मिट जाने के भय से मुक्त हो सकें।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• अज्ञेय जी का मूल नाम और उनके जन्म स्थान से जुड़ा प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षा में एक नंबर के लिए पूछा जाता है, इसे अच्छे से याद कर लेना।

• बोर्ड परीक्षा में अज्ञेय जी की बहुमुखी प्रतिभा पर अक्सर प्रश्न आते हैं। उनकी प्रमुख रचनाओं के नाम, संपादित पत्रिकाएँ और पुरस्कारों को अच्छे से याद कर लेना, खासकर 'सप्तक' परंपरा को मत भूलना।

• बोर्ड परीक्षा में इस कविता के केंद्रीय भाव पर अक्सर प्रश्न आते हैं। व्यक्ति और समाज के संबंध को उदाहरणों सहित स्पष्ट करना बहुत ज़रूरी है।

• इस कविता के दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर अक्सर व्याख्यात्मक प्रश्न आते हैं। हर पंक्ति में छुपे गहरे अर्थ को समझकर विस्तार से लिखें।

• इस कविता के दार्शनिक पक्ष को अच्छे से समझ लेना, क्योंकि बोर्ड परीक्षा में अक्सर इसके प्रतीकात्मक अर्थ और संदेश पर आधारित प्रश्न आते हैं।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर व्याख्या या काव्य सौंदर्य के रूप में आता है, जहाँ आपको 'क्षणभंगुरता' और 'जीवन के महत्व' दोनों पहलुओं को स्पष्ट रूप से समझाना होगा।

एक नज़र में रिवीज़न

› अज्ञेय: मूल नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन, कुशीनगर जन्म, क्रांतिकारी जीवन, महान साहित्यकार।

› अज्ञेय: विविध विधाओं के लेखक, 'सप्तक' प्रवर्तक, ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता।

› दीप अकेला: व्यक्ति की महत्ता, पंक्ति: सामाजिक विलय की आवश्यकता।

› व्यक्ति का अटूट विश्वास, निजी पीड़ा, अपमान में भी मानवीयता, अखंडता का दर्शन।

› बूँद: क्षणभंगुरता, विराट के सम्मुख नश्वरता से मुक्ति का अहसास।

› क्षणिक जीवन के हर पल का महत्व पहचानो; मिट जाने के भय से मुक्ति पाओ।